ISSN : 2393-9362

साहित्य सरस्वती

Peer Reviewed Journal

वर्ष-ग्यारह, अंक 44 । अक्टूबर-दिसम्बर 2024

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

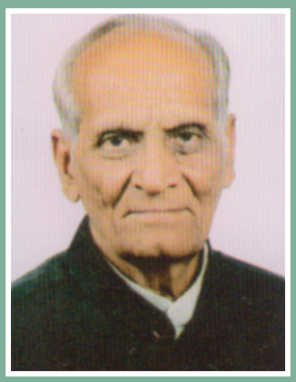

साहित्य सरस्वती
के सहृदय पाठकों को
गाँधी जयंती, विजयादशमी,
दीपावली, डॉ. हरीसिंह गौर जयंती,
संविधान दिवस, क्रिसमस
की
हार्दिक शुभकामनाएँ!

अध्यक्ष
के.के. सिलाकारी (एड.)

सचिव
पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी

सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर के सभागार में समाजवादी नेता स्व. डॉ. लक्ष्मी नारायण सिलाकारी के जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा का आयोजन हुआ। भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं विधायक पं. गोपाल भार्गव ने कहा स्व. सिलाकारी सागर की धरोहर थे। समाजवादी विचारक स्व. डॉ. लक्ष्मी नारायण सिलाकारी जब धुआँधार भाषण देते थे तो उनको सुनने के लिए लोग थम जाते थे। छात्र जीवन में मैंने भी उनको सुना है। उस समय टीवी चैनल नहीं होते थे पर उनका चैनल ऐसा था कि जब वे बोलते थे लगता था सुनते ही रहें। विचार और ऊर्जा जगा देने वाले उनके भाषणों में जोश तो होता था लेकिन किसी पर व्यक्तिगत आरोप या प्रत्यारोप कभी नहीं होते थे। विशेष अतिथि विधायक शैलेंद्र जैन ने कहा कि सिलाकारीजी राजनीति के सच्चे साधक थे। मेरे चाचा से उनके आत्मीय सम्बन्ध थे। उनके जैसे लोग विरले होते हैं। उन्होंने कहा कि 1957 में जब वे नगर पालिका का अध्यक्ष का चुनाव जीते थे उसे महल और झोपड़ी के बीच लड़ाई कहा गया था। अध्यक्षता कर रहे पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव ने कहा कि हम लोगों ने उनसे ही सीखा। उन्होंने समाजवाद को जिया और सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। वरिष्ठ अधिवक्ता पं. के. के. सिलाकारी ने अपने बड़े भाई के जीवन से जुड़े संस्मरणों को साझा किया। संस्था सचिव शुकदेव प्रसाद तिवारी ने स्वागत भाषण देते हुए कार्यक्रम की रूपरेख प्रस्तुत की। उन्होंने सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय के सामाजिक सरोकारों की जानकारी दी। इस अवसर पर वरिष्ठ अधिवक्ता चतुर्भुज सिंह राजपूत, पूर्व सांसद नंदलाल चौधरी, वाजिद अली ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर नगर के गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - ग्यारह, अंक - 44, अक्टूबर-दिसम्बर 2024

प्रधान संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

संपादक

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

उप-संपादक

प्रो. पुरुषोत्तम सोनी

डॉ. ऋतु यादव

व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN - 2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704
Peer reviewed journal वर्ष - ग्यारह, अंक - 44, अक्टूबर-दिसम्बर 2024

विषय विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुरेश आचार्य, अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी. लिट्, अध्यापक, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. मधु संधु, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब

डॉ. राजीव रंजन गिरी, हिन्दी विभाग,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,
गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- **लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।**
- **समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।**
- **सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।**
- **रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।**

आवरण
सुधीर वत्स

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क, गली नं. 1E
शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

5 सम्पादकीय – सुरेश आचार्य

7 हस्तक्षेप – लक्ष्मी पाण्डेय

धरोहर

13 **मोहनदास करमचंद गाँधी –** नये आचार

16 **माधवराव सप्रे –**एक टोकरी-भर मिट्टी (कहानी)

17 **डॉ. रामकुमार वर्मा –** श्री विक्रमादित्य (नाटक)

लेख

32 **अश्विनी कुमार दुबे –** शैलेन्द्र

40 **संतोष बंसल** – तमसो मा ज्योतिर्गमय-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

44 **विनय सिंह बैस –** मेरे मन का मंदिर!

46 **डॉ. प्रभु चौधरी –** सबदन मारि जगाये रे फकीरवा

52 **डॉ. आरती स्मित** – परम्परा और आधुनिकता के निकष पर पं. विद्यानिवास मिश्र

कहानियाँ

60 **इंद्र भंसाली –** प्रेम का प्रकाश

63 **प्रेमकुमार गौतम –** उठो निर्मला

67 **श्यामल बिहारी महतो –** पापा आप तो ऐसे न थे

75 **निरंजना जैन –** तूफान

हंगरी से अनुवादित

77 **भारत भूषण अग्रवाल**– छुट्टी का दिन : ***दैज़ो कोस्तोलान्यि (1885-1936)***

लघुकथा

83 **कल्पना भट्ट**

कविताएँ / गजलें

4 बालकृष्ण शर्मा नवीन

12 प्रो. जगदीश खरे 'जीवमित्र'

31 कर्नल पंकज सिंह

39 भगवान वैद्य 'प्रखर'

43 देवेन्द्र कुमार मिश्रा

51 अंजना वर्मा

72 प्रभा कश्यप डोगरा

83 बिहारी सागर

84 पूर्वा मिश्र तिवारी

86 डॉ. अनिल कुमार जैन 'अनिल'

87 ब्रजेश कानूनगो

88 सिद्धांत 'रेखानन्दन'

97 डॉ. सीताराम श्रीवास्तव

100 डॉ. जी. एस. छत्रसाल

संस्मरण

89 **डॉ. सुमन चौरे –**दामा दाजी का मोगरा

समीक्षाएँ

92 **दिनेश कुमार माली** – रोजनामचा, एक कवि-पत्नी का (कहानी संग्रह – उषा शर्मा संपादक – उद्भ्रांत)

98 **डॉ. शाम्भवी शुक्ला मिश्रा** – जलता हुआ पुल (काव्य संग्रह – अग्निशेखर)

101 **दयाराम वर्मा** – (द हैप्पीएस्ट मेन ऑन अर्थ – एडी जाकू ओएएम)

107 **डॉ. दुर्गा सिन्हा 'उदार '**– अमीरन (उपन्यास – एकता अमित व्यास)

110 **प्रतिक्रिया**

कविताएँ : *बालकृष्ण शर्मा नवीन*

हम हैं मस्त फ़कीर

हमसे दूर रहो री सतत, हम हैं मस्त फ़कीर।
बाघंबर से कहो क्यों बँधे चीनांशुक का चीर।
सखी री, हम हैं मस्त फ़कीर।

हमें मिला है सतत अटन का यह प्रसाद अभिशापः
गृही लोग, हम अनिकेतन की क्या जानें सुख-पीर?
सखी री, हम हैं मस्त फ़कीर!

हम क्या जानें दृग-अंजन की पतली-पतली रेख?
हम तो जान सके हैं केवल मग की 'न-इति'-लकीर।
सखी री, हम हैं मस्त फ़कीर।

हमें मिले हैं पथ में जब-तब कुछ लोचन स्मयमान,
जो हम से सैनों में बोले : दिखलाओ हिय चीर!
किंतु हम ठहरे मस्त फ़कीर!

तुम्हें मिली है मानव हिय की यह चंचल ठकुरास!
पर, हमको तो मिली अचंचल मस्ती की जागीर!
सखी री, हम हैं मस्त फ़कीर।

क्या चिंता जो हम आ बैठे कारागृह में आज?
क्या भय, जो हम को घेरे है यह ऊँची प्राचीर?
सखी री, हम हैं मस्त फ़कीर!

तुम समझो हो कि अब हो चले हम 'नवीन', प्राचीन!
क्यों भूलो हो कि हम अमर हैं!! हम हैं लौह शरीर!!!
सखी री, हम हैं मस्त फकीर!

क्या पूछो हो पता हमारा? हम हैं अगृह, अनाम!
यही पता है कि है कहीं भी अपनी नहीं कुटीर!!
सखी री, हम हैं मस्त फ़कीर!!!

प्रिय, जीवन-नद अपार

विशद पाट, तीव्र धार, गहर भँवर, दूर पार,—
प्रिय, जीवन-नद अपार।

इस तट पर ना जाने कब से रम रहे प्राण,
ना जाने कितने युग बीत चुके शून्य मान,

पर, अब की उस तट से आई है वेणु-तान,
खींच रही प्राणों को बरबस ही बार-बार
प्रिय, जीवन-नद अपार।

किस विधि नद करूँ तरित? पहुँचूँ उस पार, सजन?
कच्चा घट, जल-संकट, लहर, भँवर, तीव्र व्यजन;

भय है, गल जाएगा यह मम तरणोपकरण,
दुस्तर-सी लगती है जीवन की तीव्र धार;
प्रिय, जीवन-नद अपार।

यदि वाहित करना था जीवन-नद वेग-युक्त,—
तो यह रज-भाजन भी कर देते अग्नि-भुक्त;

पर यह तो कच्चा है, हे मेरे बन्ध मुक्त,
हैं इसमें छिद्र कई, और अनेकों विकार;
प्रिय, जीवन-नद अपार।

पहले इसके कि करो सजन वेणु-वादन तुम,—
पहले इसके कि करो स्वर का आराधन तुम,—

भेज अग्नि-पुंज, करो पक्का रज-भाजन तुम,
छूट जाए जिससे यह तरण- मरण-भीति-रार;
प्रिय, जीवन-नद अपार।

सम्पादकीय

सब ठीक ठाक है

मित्रों आज मेरी स्थिति भी पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जैसी है कि क्या लिखूँ? जिस तरह वो लेखक ए.जी. गार्डिनर के कथन से सहमत थे, मैं भी हूँ लेकिन जैसे वो विवश थे वैसे मैं भी हूँ। गार्डिनर जी का कहना है कि– "लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है। उस समय मन में कुछ ऐसी उमंग-सी उठती है, हृदय में कुछ ऐसी स्फूर्ति सी आती है, मस्तिष्क में कुछ ऐसा आवेग-सा उत्पन्न होता है कि लेख लिखना ही पड़ता है। उस समय विषय की चिन्ता नहीं रहती। कोई भी विषय हो, उसमें हम अपने हृदय के आवेग को भर ही देते हैं। हैट टाँगने के लिए कोई भी खूटी काम दे सकती है। उसी तरह अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है। असली वस्तु है हैट, खूटी नहीं।"

बिल्कुल ठीक। मगर विषय यानी खूटी और मनोभाव यानी हैट, इधर तो आज दोनों का टोटा है। बख्शी जी की समस्या उनकी बेटियों ने दूर कर दी थी उन्हें दो विषय देकर– एक ने कहा 'दूर के ढोल सुहावने' और दूसरी ने कहा 'समाज सुधार' पर निबंध लिखो। यानी उनके पास विषय रूपी खूटी आ गई और उन्होंने मनोभावों के हैट इन पर टाँग दिए। मेरे बच्चे बच्चों वाले हैं, उन्हें निबन्ध से कोई लेना-देना नहीं। मैं पढ़ता-लिखता हूँ तो आपत्ति दर्ज करते हैं पापा क्या लिखते रहते हो? आराम करो...। तो भाइयों अब आराम करने की आदत सी पड़ती जा रही है।

वैसे भी सोचता हूँ क्या लिखूँ? भारत देश में सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। चुनावों से फुर्सत सी मिल गई है फिलहाल। जो लोग जहाँ लड़-भिड़ रहे हैं, मेरा खयाल है कि वो जब तक थक नहीं जाएँगे अपना पौरुष प्रदर्शन करते रहेंगे उनका उद्देश्य केवल लड़ना है। क्यों लड़ रहे हैं, इससे क्या होगा? उन लड़ाकों में से अधिकांश को मालूम ही नहीं। तो छोड़ो भाई प्रधानमंत्री जी इनको समझा देंगे, हमें तो ये गिनेंगे भी नहीं। अब रही बात भ्रष्टाचार, हत्या, आत्महत्या, दुष्कर्मों की तो ये समाचार पत्रों की रोज की खबरे हैं– पुलिस, प्रशासन और पत्रकार इनसे निपट रहे हैं। दिन, सप्ताह और माह बीत रहे हैं। मौसम भी बदल गया। अब हम 2024 के अंतिम चरण में आ पहुँचे हैं। पुलिस-प्रशासन के साथ पत्रकारों के परिश्रम को धन्य है।

उपरोक्त समस्याओं पर साल-दर-साल बात होती रही है अब बीते दिनों की समझाइशों, उपदेशों, सलाहों और सजाओं पर दृष्टि डालता हूँ तो लगता है हम सब चलनी में पानी छानते रहे। नतीजा, यह कि उतने ही नहीं बल्कि उससे ज्यादा भ्रष्टाचार, दुष्कर्म, हत्या और आत्महत्याओं के केस बढ़े हैं। क्या करें? आप सभी इन समस्याओं का हल सोचें। भविष्य में भारत की बेदाग छवि निर्मित हो। मानवीय मूल्यों का पुनर्जागरण हो और धन धान्य से सम्पन्न हमारा देश संस्कार सम्पन्न मनुष्यों का देश कहलाता हुआ गौरवान्वित हो। यह कामना हर भारतीय की हो। यूँ तो बहुत से विमर्श हमारे साहित्यिक क्षेत्र में चल रहे हैं– आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, वृद्ध विमर्श, बाल विमर्श, किन्नर विमर्श, आधुनिकता विमर्श आदि। एक मनुष्यता विमर्श भी चले। मैं साहित्य की ताकत पर बड़ा भरोसा करता हूँ। पेशे से